श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

सूर्य ग्रहण साधनायें -21/06/2020

पुण्य काल 10:01 से 13:28

1) गुरु मंत्र: || ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः||

विधान:- साधक या साधिकाये ,पूर्व या उत्तर दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | ग्रहण काल मे कम से कम 16 माला गुरु मंत्र का जाप करे और स्फटिक माला का प्रयोग करे |

सामाग्री :- स्फटिक माला

जप संख्या :- कम से कम 16 माला

2) मनोकामना पूर्ति :

मंत्र : || ॐ श्रीं घृणि: सूर्य आदित्य: ||

विधान:- साधक या साधिकाये , सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन(घी का दीपक) कर साधना आरंभ करे | इच्छा व्यक्त कर ,दीपक पर त्राटक करते हुये 21 माला जप करे |

सामाग्री :- स्फटिक माला

जप संख्या :- 21 माला

3) रोग निवारण प्रयोग:

मंत्र: || ॐ वं आरोग्यानिकरी रोगनशेषा नमः||

विधान:- साधक या साधिकाये ,पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे |

सामाग्री :- मुंगा माला

जप संख्या :- 11 माला

4) समस्त शत्रु नाश प्रयोग:

विधान:- साधक या साधिकाये ,पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | बगलमुखि कवच का पाठ 21 बार करे |

श्रीपीताम्बरा—बगलामुखी—खड्गमालामन्त्रः

॥श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा—बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः। नारायणऋषये नमः शिरसी, त्रिष्टुपछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये; स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह् वां कीलय कनिष्ठकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि।

ॐ ह्रीं सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरु कुरु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठजिह्वा-तालुकण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्वद्वय-गुह्य-गुदाण्ड-त्रिकजानुपादसर्वाङ्गेषु पादादिकेशपर्यन्तं केशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र - परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय छेदय आत्ममन्त्र-यन्त्रत-

MI NOTE 8

न्राणि रक्ष रक्ष सर्वग्रहान् निवारय निवारय सर्वम् अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हन हन दारिद्र्यं निवारय निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोगस्वरूपिणि दुष्टग्रहचण्डग्रह-भूतग्रहाऽऽकाशग्रह - चौरग्रह - पाषाणग्रह - चाण्डालग्रह - यक्षगन्धर्वकिन्नरह- ब्रह्मराक्षसग्रह-भूतोत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय वाराहि बगलामुखि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवाहाहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय घूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय कुक्कुट-वाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय, बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु ॐ ह्रीं क्लीं ऐं वाकप्रदानाय क्लीं जगत्त्रवशीकरणाय सौः सर्वमनः क्षोभणाय श्रीं महास-म्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्यप्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजनसंमोहिनि सभास्तम्भिनि स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वां बन्धयामि सकलजनसर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व-मृग-सर्प-विहङ्गमवृश्चिकादि-महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरु कुरु ॐ ह्रीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः।

5) तंत्र बाधा निवारण प्रयोग:

किसी भी तरह के तंत्र बाधा निवारण हेतु |

विधान:- साधक या साधिकाये ,पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | धुमवती माला मंत्र का 21 बार पाठ करे |

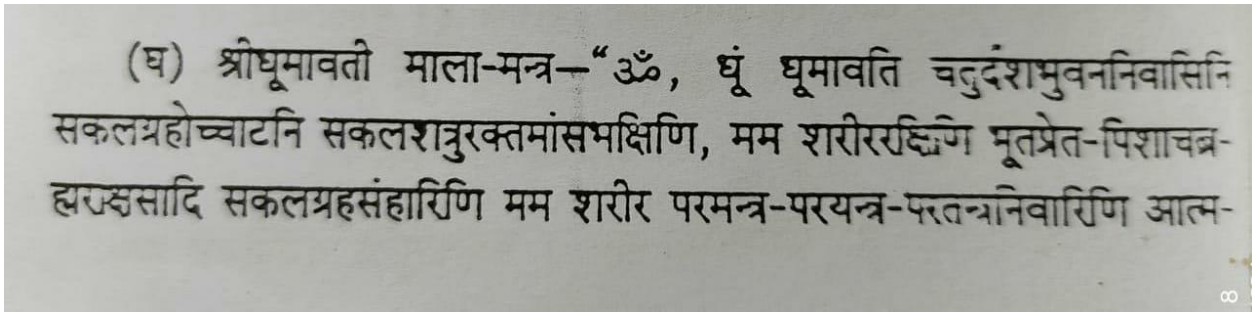

(घ) श्रीधूमावती माला-मन्त्र—"ॐ, धूं धूमावति चतुर्दशभुवननिवासिनि सकलग्रहोच्चाटनि सकलशत्रुरक्तमांसभक्षिणि, मम शरीररक्षिणि भूतप्रेत-पिशाचब्रह्मराक्षसादि सकलग्रहसंहारिणि मम शरीर परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्रनिवारिणि आत्म-

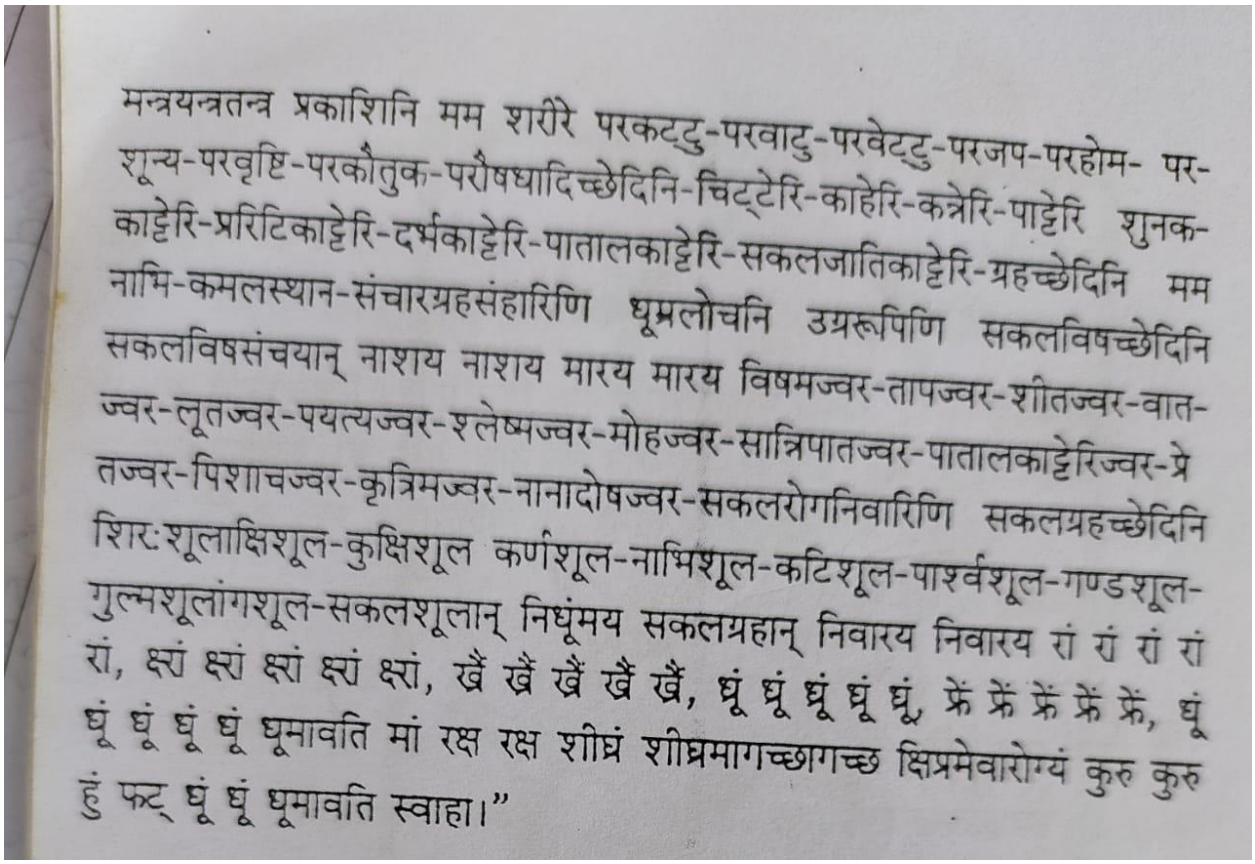

मन्त्रयन्त्रतन्त्र प्रकाशिनि मम शरीरे परकट्टु-परवाटु-परवेट्टु-परजप-परहोम- पर-शून्य-परवृष्टि-परकौतुक-परौषधादिच्छेदिनि-चिट्टेरि-काहेरि-कत्तेरि-पाट्टेरि शुनक-काट्टेरि-प्ररिटिकाट्टेरि-दर्भकाट्टेरि-पातालकाट्टेरि-सकलजातिकाट्टेरि-ग्रहच्छेदिनि मम नामि-कमलस्थान-संचारग्रहसंहारिणि धूम्रलोचनि उग्ररूपिणि सकलविषच्छेदिनि सकलविषसंचयान् नाशय नाशय मारय मारय विषमज्वर-तापज्वर-शीतज्वर-वात-ज्वर-लूतज्वर-पयत्यज्वर-श्लेष्मज्वर-मोहज्वर-सान्निपातज्वर-पातालकाट्टेरिज्वर-प्रेतज्वर-पिशाचज्वर-कृत्रिमज्वर-नानादोषज्वर-सकलरोगनिवारिणि सकलग्रहच्छेदिनि शिरःशूलाक्षिशूल-कुक्षिशूल कर्णशूल-नाभिशूल-कटिशूल-पार्श्वशूल-गण्डशूल-गुल्मशूलांगशूल-सकलशूलान् निधूंमय सकलग्रहान् निवारय निवारय रां रां रां रां रां, क्षां क्षां क्षां क्षां क्षां, खैं खैं खैं खैं खैं, धूं धूं धूं धूं धूं, फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें, धूं धूं धूं धूं धूमावति मां रक्ष रक्ष शीघ्रं शीघ्रमागच्छागच्छ क्षिप्रमेवारोग्यं कुरु कुरु हुं फट् धूं धूं धूमावति स्वाहा।"

6) लक्ष्मी प्रत्यक्ष कृपा हेतु:

यह साधना गृह निर्माण,गृह कलह निवारण ,सौभाग्य वृद्धि हेतु उपयोग है |

स्तोत्र: || श्री सूक्त ||

विधान:- साधक या साधिकाये ,पीले वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और लक्ष्मी नारायण जि का चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन कर पाठ आरंभ करे |

जप संख्या :- 16 बार